सीखने के स्तरों में विविधता का प्रबन्धन : कुछ रणनीतियाँ

अक्षता एस बेल्लुडी

कलबुरगि के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में जिस समय बच्चे प्रवेश लेते हैं, तभी से उनकी विविधता का ध्यान रखने के लिए सजगता से प्रयास किए जाते हैं। प्रारम्भिक कक्षा के शिक्षक के लिए यह सुनिश्चित करना कोई आसान काम नहीं है कि सभी बच्चों का स्वागत अच्छी तरह से हो, और उन्हें अपनी गति से सीखने की क्षमता प्रदान की जाए।

स्कूल में अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे आते हैं। इनमें कृषि मज़दूरों के बच्चे और विश्वविद्यालय के सदस्यों के बच्चे शामिल होते हैं। स्कूल में ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों, एवं प्रवासी मज़दूरों और एकल माता-पिता वाले विद्यार्थियों की संख्या भी लगभग बराबर ही है। कुछ विद्यार्थी ऐसे हैं जिनके बचपन का अनुभव बहुत अच्छा है, वहीं कुछ ऐसे हैं जो इस स्कूल में आने से पहले किसी स्कूल में गए ही नहीं हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जिन्हें लगातार दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा है। इन सबके अलावा, हमारे स्कूल में ऐसे बच्चे भी हैं जिनकी घरेलू भाषाएँ अलग-अलग हैं। जैसे– उर्दू, मराठी, लम्बाणी, कन्नड़ आदि। यही नहीं, कुछ बच्चे तो एक भाषा के अन्तर्गत आने वाली अलग-अलग बोलियाँ भी बोलते हैं।

इतनी विविधताओं के चलते विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में काफ़ी अन्तर आ जाता है। अभी, पहली कक्षा में, मेरे पास कुछ विद्यार्थी ऐसे हैं जो तीसरी कक्षा के स्तर की पाठ्य सामग्री आसानी से पढ़ सकते हैं, वहीं कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें मूल ध्वनियों का कोई ज्ञान नहीं है; एक ओर ऐसे विद्यार्थी हैं जो दो अंकों का जोड़-घटाव कर सकते हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे बच्चे हैं जिन्हें अभी भी संख्याओं का बोध नहीं है।

हमें यह सुनिश्चित करना होता है कि शैक्षिक वर्ष के अन्त तक सभी बच्चे आवश्यक दक्षताएँ हासिल कर लें। सीखने की विभिन्न शैलियों वाले 30 अलग-अलग बच्चों के साथ काम करना, वह भी एकल शिक्षक के रूप में, हर दिन एक नई चुनौती लेकर आता है। मैं कुछ ऐसी रणनीतियों का उल्लेख करना चाहूँगी,

चित्र 1 : सभी बच्चों को खेल में शामिल करना ज़रूरी

चित्र 2 : घोंसले के बारे में बातचीत

जिन्हें मैंने अपने विद्यार्थियों की सीखने में सहायता करने के लिए आज़माया है।

बहुभाषी सभा

अपने एक विद्यार्थी फ़ैज़ान और उसकी स्कूल व कक्षा में भागीदारी के बारे में यहाँ ज़िक्र करना चाहूँगी। फ़ैज़ान बार-बार बीमार पड़ जाता था, और नियमित रूप से स्कूल नहीं आ पाता था। यह बच्चा अपनी रुचियों और पहचान को खोजने के लिए बहुत जद्दोजहद कर रहा था। उसकी समस्या यह भी थी कि उसके आसपास के सभी लोग कन्नड़ में बात करते थे जिसे वह समझ नहीं पाता था।

इस समस्या को हल करने के लिए, हमने अपनी फ़ाउण्डेशनल स्टेज क्लास (प्री-स्कूल / एलकेजी से दूसरी कक्षा तक) के लिए सप्ताह में एक बार हिन्दी में स्कूल सभा शुरू की। एक बार जब फ़ैज़ान से हिन्दी में सवाल का जवाब देने के लिए कहा गया तब हम उसकी आँखों में झलकती ख़ुशी को साफ़-साफ़ देख पा रहे थे। अब हम सप्ताह में चार दिन तीनों भाषाओं में सुबह की सभा आयोजित करते हैं– दो दिन अँग्रेज़ी में और एक-एक दिन हिन्दी व कन्नड़ में। सभा की गतिविधियों में गायन, नृत्य, कहानी पढ़ना, समाचार पत्र पढ़ना और सभी स्तर के शिक्षार्थियों के लिए पहेलियों के साथ ही सभी बच्चों के शारीरिक विकास के लिए योग, वर्कआउट और व्यायाम शामिल हैं। हम समाचार पत्रों से ऐसी ख़बरों को चुनते हैं जो इस आयु वर्ग के बच्चों को दिलचस्प लगें और वे उनसे जुड़ सकें। जैसे– बाघ का पकड़ा जाना, बारिश और बाढ़, भारतीय खेल टीमों का मैच जीतना, आदि। हम समाचारों पर इस तरह की चर्चाएँ करते हैं जिनसे बच्चों को सोचने, कल्पना करने और उन्हें ध्यानपूर्वक समझने में मदद मिले। बच्चे हर रोज़ शिक्षकों से कम-से-कम मदद लेते हुए ख़ुद ही सभा का संयोजन करते हैं। फ़ैज़ान अब नियमित रूप से स्कूल आने लगा है।

> **मेरे लिए समावेशन का अर्थ यह है कि मेरे सभी विद्यार्थी सफलता की भावना के साथ घर लौटें, वे सभी अपने क्रियाकलापों में व्यस्त रहें, और अपने पढ़ने-सीखने का आनन्द ले पाएँ।**

सोचने का समय

अपनी कक्षा में हर बच्चे की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए हमने यह नियम बनाया है कि सवाल पूछने के अलावा किसी और बात के लिए हाथ नहीं उठाना है। ऐसा नियम इसलिए बनाया गया क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि जैसे ही मैं कोई सवाल पूछती हूँ तो वे बच्चे फ़टाफ़ट जवाब देने के लिए तत्पर हो जाते हैं जिन्हें घर में बेहतर अवसर, बेहतर समर्थन और बेहतर शुरुआती बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा (ईसीसीई) का अनुभव मिला है, वहीं बाक़ी बच्चे सोचने की कोशिश तक नहीं करते।

जब मैं कोई सवाल पूछती हूँ तो सभी बच्चों को एक मिनट का 'सोचने का समय' दिया जाता है। शुरू में इसे मॉडल के रूप में अपनाया गया था, लेकिन अब यह हमारी प्रक्रिया का हिस्सा बन गया है। मैं यह सुनिश्चित करती हूँ कि बच्चे सवाल को समझें, इसलिए मैं उनमें से किसी एक को सवाल समझाने के लिए कहती हूँ।

मैं विद्यार्थियों के नाम लिखी हुईं आइसक्रीम स्टिक का इस्तेमाल करती हूँ ताकि सवाल का जवाब देने के लिए विद्यार्थियों को रैंडम तरीक़े से चुना जा सके, और सभी को जवाब देने का मौक़ा मिले। और, चूँकि वे जानते हैं कि उनका नाम कभी भी पुकारा जा सकता है, इसलिए वे ध्यान से सुनते हैं। सभी बच्चों को सोचते हुए और फिर अलग-अलग विचारों को प्रकट करते हुए देखना बेहद दिलचस्प अनुभव होता है।

साथियों को सहायता और समर्थन देना

शैक्षिक वर्ष की शुरुआत में, मेरी कक्षा में सीखने के उच्च स्तर वाले बच्चे तो थे ही, साथ ही ऐसे बच्चे भी थे जिन्हें सीखने का कोई अनुभव नहीं था। उनके बीच में एक दूसरे का ध्यान रखने या साझा करने की भावना बहुत कम थी। इसलिए मैंने उनसे इस बारे में बातचीत की, ताकि उन्हें यह समझने में मदद मिल सके कि उन्हें एक दूसरे की मदद क्यों करनी चाहिए। हमने इस बारे में बात की कि घर पर उनकी मदद कौन करता है; हम सभी को सहायता की आवश्यकता क्यों है; कैसे उनके कुछ दोस्तों को घर पर सहायता नहीं मिल पाती है; वे एक दूसरे की सहायता कैसे कर सकते हैं; और यह भी कि जब वे दूसरों की मदद करते हैं तो उनके ख़ुद के सीखने में सुधार होता है।

बच्चे भी बहुत-सी चीज़ें साझा करना चाहते हैं। लेकिन उन सभी को सर्कल टाइम के दौरान शामिल नहीं किया जा सकता है। इसलिए, हमने 'जोड़ी बनाओ और साझा करो' (pair-and-share) नामक गतिविधि शुरू की, जहाँ वे एक दूसरे के विविधतापूर्ण विचारों को सुनते और साझा करते हैं।

अध्यापन को बच्चों के सन्दर्भ से जोड़ना

हसीना के प्रिय पालतू पशु

हसीना एक नई छात्रा है जिसका शिक्षा सम्बन्धी अनुभव बहुत कम है। उसे कक्षा में बैठना सीखने में ही एक सप्ताह से अधिक समय लगा। अब वह थोड़ी-बहुत अँग्रेज़ी बोल लेती है, हालाँकि बुनियादी ध्वनियों को लेकर उसे अभी भी थोड़ी कठिनाई होती है। हसीना को अपने दोस्तों के साथ मौखिक रूप से अपने अनुभव साझा करना बहुत पसन्द है। ख़ासकर, उसे अपने पालतू जानवरों (अपने पिल्ले और बिल्ली के बच्चे) के बारे में बात करना बहुत अच्छा लगता है। अतः उसकी सहायता करने के लिए मैंने उसके पालतू जानवरों पर एक पाठ तैयार किया। बच्चों को हसीना से उसके पालतू जानवरों के बारे में जानकारी प्राप्त करना बेहद अच्छा लगा। हसीना ने बहुत आत्मविश्वास दिखाया और बड़ी उत्सुकता के साथ उनके बारे में बातें साझा कीं। उसने उस दिन दो नई ध्वनियाँ भी सीखीं।

आइए, अपने गाँव का अध्ययन करें

हमने बच्चों के गाँवों के बारे में जानकारी इकट्ठा की ताकि वे सभी एक दूसरे को बेहतर तरीक़े से जान सकें। दूरदराज़ के गाँवों से आने वाले बच्चों ने कक्षा में अपने गाँवों के महत्त्वपूर्ण स्थानों के बारे में बात की, और फिर बाक़ी विद्यार्थियों ने सवाल पूछकर उनसे और अधिक जानकारी जुटाने की कोशिश की। इससे मेरे विद्यार्थियों के बीच आपस में सीखने और एक दूसरे के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने में भी मदद मिली है।

चित्र 3 : दीवार पर क्या है, अवलोकन करते बच्चे

अभिभावक दिवस मनाना

हर शनिवार को, हमारे बच्चों में से किसी एक के अभिभावक हमारी कक्षा में आते हैं और एक घण्टे के लिए कोई विशेष कौशल सिखाते हैं। जैसे– बुनाई, कोई कारीगरी या फूल बनाना, आदि। इससे बच्चों में अपने अभिभावकों के पेशे या कौशल के बारे में गर्व की भावना पैदा होती है। बच्चे यह भी समझते हैं कि सीखने के लिए कई ऐसी चीज़ें हैं जो भले ही उनके पाठ का हिस्सा न हों, लेकिन वे उनके जीवन और सीखने से जुड़ी हैं। इन सत्रों में, अच्छे गत्यात्मक कौशल वाले बच्चे कार्यों को पूरा करने में दूसरों की मदद करते हैं।

चित्र 4 : अपने-अपने नाम वाली स्टिक

आसपास की प्रकृति की देखभाल

हमारी पहली कक्षा के विद्यार्थी अपने आसपास की प्रकृति की खोजबीन करते हैं। वे बया पक्षी को अपना घोंसला बनाते हुए देखते हैं, कनखजूरे और चींटियों को पानी में डूबने से और घोंघे को कुचले जाने से बचाते हैं। इससे उनमें प्रकृति के प्रति जिज्ञासा और उसका ध्यान रखने की भावना विकसित हुई है।

मेरे लिए समावेशन का अर्थ यह है कि मेरे सभी विद्यार्थी सफलता की भावना के साथ घर लौटें, वे सभी अपने क्रियाकलापों में व्यस्त रहें, और अपने पढ़ने-सीखने का आनन्द ले पाएँ। मैं प्रतिदिन इसका प्रयास करती रहती हूँ। मैं यह दावा नहीं कर सकती कि मेरी कक्षा पूरी तरह से समावेशी है। अपने और अपने विद्यार्थियों की समानुभूति और सुनने के कौशल को विकसित करने के लिए अभी भी एक लम्बा रास्ता तय करना है जो समावेशन का आधार है, प्रयास जारी हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

सन्दर्भ

Black P. & Wiliam D. (1998). 'Assessment and Classroom Learning.' *Assessment in Education: Principles, Policy & Practice,* 5(1), 7–74.

अक्षता एस बेल्लुडी वर्तमान में कर्नाटक के कलबुरगि में अज़ीम प्रेमजी स्कूल में बतौर एक शिक्षिका कार्यरत हैं। पहले वे कर्नाटक के कोप्पल ज़िले के गंगावती ब्लॉक में एक शिक्षिका थीं, जहाँ उन्होंने सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के काम में उनकी सहायता की। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में आने से पहले वे भारतीय स्टेट बैंक के यूथ फॉर इंडिया कार्यक्रम की फेलो थीं। उन्हें सॉफ़्टवेयर इंजीनियर के रूप में सात साल का कार्य अनुभव भी है।

सम्पर्क : akshatha.belludi@azimpremjifoundation.org